नसीम अल बह्र का 15वां संस्करण: भारत-ओमान समुद्री साझेदारी और महासागर दृष्टि

समाचार-संदर्भ: PIB, 9 नवंबर 2026, 15:00 IST | **प्रकाशन:** 10 नवंबर 2026
प्रिलिम्स: रक्षा और अंतर्राष्ट्रीय संबंध
मुख्य परीक्षा: रक्षा और अंतर्राष्ट्रीय संबंध



मौलिक प्रतीकात्मक चित्र: pcsmantra.com

खबरों में क्यों

भारतीय नौसैन्य पोत आईएनएस सूरत 8 नवंबर 2026 को भारत और ओमान की रॉयल नेवी के द्विपक्षीय समुद्री अभ्यास 'नसीम अल बह्र' (समुद्री समीर) के 15वें संस्करण में भाग लेने ओमान के मस्कट पहुंचा। अभ्यास के बाद दोनों नौसेनाओं की समन्वित गश्त (CORPAT) भी आयोजित की जाएगी। रक्षा मंत्रालय ने यह जानकारी 9 नवंबर 2026 को दी।

11 नवंबर 2026 का अपडेट: अभ्यास का 15वां संस्करण संपन्न

रक्षा मंत्रालय की 11 नवंबर 2026 की विज्ञप्ति के अनुसार भारतीय नौसेना और रॉयल नेवी ऑफ ओमान के बीच 'नसीम अल बह्र' (समुद्री समीर) का 15वां संस्करण संपन्न हो चुका है। अभ्यास का उद्देश्य अंतर-संचालनीयता, पेशेवर सहयोग और परस्पर समझ बढ़ाना था।

बंदरगाह चरण: दोनों नौसेनाओं की विशेषज्ञ टीमों के बीच विषय-विशेषज्ञ आदान-प्रदान (SMEE) हुए — विस्फोटक निपटान (EOD), खनि-प्रतिरोध कार्रवाइयाँ (Mine Countermeasure Operations) और जलराशि-विज्ञान (Hydrography)।

समुद्री चरण: आईएनएस सूरत और ओमानी पोत अल-मुअज़्ज़र (Al-Mu'azzar) के बीच संयुक्त VBSS (विज़िट, बोर्ड, सर्च एंड सीज़र) ड्रिल और क्रॉस-डेक कार्रवाइयाँ हुईं।

परीक्षा-दृष्टि: यह अभ्यास 1993 से द्विवार्षिक रूप से हो रहा है और भारत सरकार की 'महासागर' (MAHASAGAR) दृष्टि से जुड़ता है। अभ्यास के बाद दोनों नौसेनाओं की समन्वित गश्त (CORPAT) होनी है — उसकी पूर्णता की पुष्टि अभी नहीं हुई है।

भूमिका

भारत और ओमान के बीच वर्षों पुराने मैत्रीपूर्ण संबंध हैं। नौसैनिक अभ्यास इस साझेदारी को परिचालन स्तर पर आगे बढ़ाते हैं: कर्मी एक-दूसरे की प्रक्रियाएँ समझते हैं और संयुक्त गतिविधियों से समन्वय का अभ्यास करते हैं।

मुख्य भाग

15वें संस्करण की विशेषताएँ: - बंदरगाह और समुद्री दोनों चरणों में पेशेवर गतिविधियाँ: एक-दूसरे के पोतों का दौरा, परिचालन विचार-विमर्श और खेल गतिविधियाँ - अभ्यास के बाद समन्वित गश्त (CORPAT) - आईएनएस सूरत की भागीदारी: यह P15B निर्देशित-मिसाइल विध्वंसक परियोजना का चौथा और अंतिम पोत है, जो 15 जनवरी 2025 को मुंबई के नौसैनिक डॉकयार्ड में कमीशन हुआ था

साझेदारी के आयाम: - अंतर-संचालनीयता और परस्पर समझ में वृद्धि - 24 नवंबर 2025 को हुई संयुक्त सैन्य सहयोग समिति (JMCC) की 13वीं बैठक की सकारात्मक गति को आगे बढ़ाना - हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा पर साझा दृष्टिकोण

महासागर दृष्टि: यह दौरा भारत सरकार के 'महासागर' यानी क्षेत्रों में सुरक्षा एवं विकास के लिए पारस्परिक और समग्र उन्नति के दृष्टिकोण के अनुरूप है, इस संदर्भ में समन्वय और साझेदारी को समुद्री सहयोग से जोड़ा गया है।

स्थल, साझेदार और गतिविधि का सही युग्म

‘नसीम अल बह्र’ भारत और ओमान की नौसेनाओं का द्विपक्षीय समुद्री अभ्यास है। 15वें संस्करण के लिए आईएनएस सूरत का आगमन ओमान के मस्कट में हुआ। इसे भारत-म्यांमार त्रि-सेना राहत अभ्यास या किसी बहुपक्षीय नौसैनिक आयोजन से न मिलाएँ। समाचार में बंदरगाह और समुद्री दोनों चरणों की गतिविधियाँ हैं।

पारस्परिक पोत-दौरे, परिचालन चर्चा और खेल गतिविधियाँ बंदरगाह पर पेशेवर संपर्क के संदर्भ हैं। इसके बाद समुद्री अभ्यास और फिर समन्वित गश्त की अलग भूमिका है। विज्ञप्ति में समन्वित गश्त के लिए CORPAT का उल्लेख है; यह अभ्यास के नाम का अनुवाद नहीं है।

तारीख और पूर्णता में अंतर

8 नवंबर 2026 पोत के मस्कट पहुँचने की तारीख है। 9 नवंबर रक्षा मंत्रालय की सूचना की तारीख है। 9 नवंबर की विज्ञप्ति में अभ्यास तथा उसके बाद गश्त आगामी गतिविधियों के रूप में थीं; 11 नवंबर की विज्ञप्ति ने अभ्यास के पूरा होने की पुष्टि कर दी है। समन्वित गश्त (CORPAT) अभी अभ्यास के बाद की प्रस्तावित गतिविधि है।

विज्ञप्ति 24 नवंबर 2025 की संयुक्त सैन्य सहयोग समिति की 13वीं बैठक का भी उल्लेख करती है। यह उस समिति की बैठक-संख्या है, नसीम अल बह्र के संस्करण की नहीं। अभ्यास का 15वाँ संस्करण और समिति की 13वीं बैठक दो अलग क्रम हैं।

निष्कर्ष

'नसीम अल बह्र' का 15वां संस्करण भारत-ओमान समुद्री साझेदारी की निरंतरता और गहराव दोनों दर्शाता है। आईएनएस सूरत जैसे नवीनतम स्वदेशी पोत की भागीदारी इसमें आत्मनिर्भर रक्षा-निर्माण का आयाम भी जोड़ती है।

साझेदारी में अभ्यास और गश्त की अलग भूमिकाएँ

9 नवंबर की विज्ञप्ति अभ्यास और उसके बाद प्रस्तावित CORPAT को अलग गतिविधियों के रूप में रखती है। बंदरगाह चरण में पोतों का पारस्परिक दौरा और पेशेवर बातचीत एक-दूसरे की कार्यप्रणाली समझने के अवसर हैं। समुद्री चरण उस परिचय को परिचालन अभ्यास से जोड़ता है। समन्वित गश्त को इस पूरे अभ्यास का केवल दूसरा नाम मानना सही नहीं होगा।

इस क्रम का नीतिगत महत्व संपर्क की निरंतरता में है। नौसेनाओं के बीच समझ केवल वरिष्ठ स्तर की बातचीत से नहीं, कर्मियों के पेशेवर आदान-प्रदान और निर्धारित प्रक्रियाओं को समझने से भी बनती है। फिर भी विज्ञप्ति में बताए उद्देश्य और मापे गए परिणाम अलग हैं। प्रस्तावित गतिविधियों से भविष्य के समन्वय की संभावना पर चर्चा की जा सकती है; किसी निश्चित परिचालन सुधार का आँकड़ा उपलब्ध नहीं है।

रक्षा-निर्माण और रक्षा-सहयोग को जोड़ना

आईएनएस सूरत की भागीदारी को एक ओर स्वदेशी पोत-निर्माण और दूसरी ओर अंतर्राष्ट्रीय पेशेवर सहयोग से जोड़कर पढ़ा जा सकता है। लेकिन किसी पोत के विदेश जाने से रक्षा-निर्यात समझौता हो जाने का निष्कर्ष नहीं निकलता। इसी तरह द्विपक्षीय अभ्यास अपने-आप सामूहिक रक्षा-संधि या साझा सैन्य कमान नहीं बनाता।

मुख्य परीक्षा में इसलिए साधन, गतिविधि और उद्देश्य का अंतर रखें: पोत क्षमता का साधन है; अभ्यास तथा गश्त सहयोग की गतिविधियाँ हैं; अंतर-संचालनीयता और परस्पर समझ उनके घोषित उद्देश्य हैं। वास्तविक परिणाम का मूल्यांकन गतिविधियाँ पूरी होने और उनके अनुभव सामने आने के बाद ही होगा।

सीमाएँ और मूल्यांकन

पोत का आगमन, अभ्यास के लिए तय गतिविधियाँ और अभ्यास के बाद प्रस्तावित गश्त अलग चरण हैं। 9 नवंबर की विज्ञप्ति से अभ्यास या CORPAT के पूरा होने का निष्कर्ष नहीं निकलता था; 11 नवंबर की विज्ञप्ति से अभ्यास-पूर्णता की पुष्टि हो चुकी है, CORPAT की नहीं। आगे सहयोग का मूल्यांकन वास्तविक संयुक्त गतिविधियों, समन्वय और प्रशिक्षण के परिणामों से होगा, केवल यात्राओं की संख्या से नहीं।

आगे की राह

निम्न बिंदु विश्लेषणात्मक सुझाव हैं, नई सरकारी घोषणाएँ नहीं:

- CORPAT जैसी गश्त-व्यवस्था को और संस्थागत करना

- हिंद महासागर में मानवीय सहायता, पाइरसी-रोध और समुद्री सुरक्षा पर विस्तृत सहयोग
- रक्षा-विनिर्माण और प्रशिक्षण में द्विपक्षीय साझेदारी

प्रिलिम्स परीक्षा अभ्यास प्रश्न

1. 'नसीम अल बह्र' अभ्यास भारत का किस देश के साथ द्विपक्षीय नौसैनिक अभ्यास है?

(a) संयुक्त अरब अमीरात

(b) सऊदी अरब

(c) ओमान

(d) कतर

उत्तर और व्याख्या

उत्तर: (c)

'नसीम अल बह्र' (समुद्री समीर) भारत और ओमान की रॉयल नेवी के बीच द्विपक्षीय समुद्री अभ्यास है; 2026 में इसका 15वां संस्करण संपन्न हुआ।

2. आईएनएस सूरत के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह P15B निर्देशित-मिसाइल विध्वंसक परियोजना का पोत है

2. यह जनवरी 2025 में मुंबई में कमीशन हुआ

3. यह P75 पनडुब्बी परियोजना का पोत है

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 3

(d) 1, 2 और 3

उत्तर और व्याख्या

उत्तर: (a)

कथन 1 और 2 सही हैं: आईएनएस सूरत P15B परियोजना का विध्वंसक है और 15 जनवरी 2025 को कमीशन हुआ। कथन 3 गलत है: आईएनएस सूरत P15B परियोजना का निर्देशित-मिसाइल विध्वंसक है, पनडुब्बी नहीं।

मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

भारत और ओमान के बीच द्विपक्षीय नौसैनिक अभ्यास 'नसीम अल बह्र' के 15वें संस्करण के संदर्भ में दोनों देशों की समुद्री साझेदारी का मूल्यांकन करें। यह भारत की 'महासागर' (MAHASAGAR) दृष्टि से कैसे जुड़ती है?

उत्तर की रूपरेखा:

भूमिका में: भारत और ओमान के बीच वर्षों पुराने मैत्रीपूर्ण संबंध हैं। नौसैनिक अभ्यास इस साझेदारी को परिचालन स्तर पर आगे बढ़ाते हैं: कर्मी एक-दूसरे की प्रक्रियाएँ समझते हैं और संयुक्त गतिविधियों से समन्वय का अभ्यास करते हैं।

मुख्य भाग में: 15वें संस्करण की विशेषताएँ: - बंदरगाह और समुद्री दोनों चरणों में पेशेवर गतिविधियाँ: एक-दूसरे के पोतों का दौरा, परिचालन विचार-विमर्श और खेल गतिविधियाँ - अभ्यास के बाद समन्वित गश्त (CORPAT) - आईएनएस सूरत की भागीदारी: यह P15B निर्देशित-मिसाइल विध्वंसक परियोजना का चौथा और अंतिम पोत है, जो 15 जनवरी 2025 को मुंबई के नौसैनिक डॉकयार्ड में कमीशन हुआ था

साझेदारी के आयाम: - अंतर-संचालनीयता और परस्पर समझ में वृद्धि - 24 नवंबर 2025 को हुई संयुक्त सैन्य सहयोग समिति (JMCC) की 13वीं बैठक की सकारात्मक गति को आगे बढ़ाना - हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा पर साझा दृष्टिकोण

महासागर दृष्टि: यह दौरा भारत सरकार के 'महासागर' यानी क्षेत्रों में सुरक्षा एवं विकास के लिए पारस्परिक और समग्र उन्नति के दृष्टिकोण के अनुरूप है, इस संदर्भ में समन्वय और साझेदारी को समुद्री सहयोग से जोड़ा गया है।

निष्कर्ष में: 'नसीम अल बह्र' का 15वां संस्करण भारत-ओमान समुद्री साझेदारी की निरंतरता और गहराव दोनों दर्शाता है। आईएनएस सूरत जैसे नवीनतम स्वदेशी पोत की भागीदारी इसमें आत्मनिर्भर रक्षा-निर्माण का आयाम भी जोड़ती है।

स्रोत

- PIB, रक्षा मंत्रालय, 9 नवंबर 2026 (रिलीज़ आईडी 2334358)
- प्रधानमंत्री कार्यालय, आईएनएस सूरत समर्पण, 15 जनवरी 2025
- PIB, रक्षा मंत्रालय: नसीम अल बह्र 15वां संस्करण संपन्न, 11 नवंबर 2026 (रिलीज़ आईडी 2335193)